पतरस का पहला 'आम ख़त

[illegible]

शुरूआती आयत इशरा करती है कि पतरस, येसू मसीह का रसूल इस ख़त का मुसन्निफ़ है। जो ख़ुद को येसू मसीह का रसूल कहलाता था (1 पतरस 1:1) मसीह के दुखों की बाबत उसके अक्सर हवालाजात; (2:21 — 24; 3:18; 4:1; 5:1) दिखाते हैं कि दुख उठाने वाले ख़ादिम की सूरत उस की याददाश्त पर गहराई से थी। वह मरक़ुस को अपना बेटा कहता है (5:13) (आ'माल 12:12) में एक जवान के लिए उस पर शफ़क़त ज़ाहिर करते हुए उस ने उस के ख़ान्दान का ज़िक्र किया। यह सच्चाइयाँ फ़ितरी तौर से इस नतीजे पर पहुंचाती हैं कि पतरस ने ही इस ख़त को लिखा।

[illegible]

तक़रीबन 60 - 64 ईस्वी के बीच लिखा गया।

5:13 में मुसन्निफ़ बाबुल की कलीसिया की तरफ़ से सलाम पहुंचाता है।

[illegible]

पतरस ने इस ख़त को मसीहियों की एक जमाअत को लिखा जो एशिया माइनर के तमाम शुमाली इलाक़ों में जा — बजा फैले हुए थे। उस ने एक ऐसी जमाअत को भी लिखा जो ग़ालिबन यहूदी और ग़ैर यहूदी दोनों थे।

[illegible]

पतरस ने इस के लिखने के मक़्सद को बताया है, जैसे कि क़ारिईन की हौसला अफ़्ज़ाई जो अपने ईमान के लिए सताव का सामना कर रहे थे। वह उन्हें पूरी तरह से यक़ीन दिलाना चाहता था जहाँ मसीहियत है वहाँ ख़ुदा का फ़ज़ल भी पाया

जाता है, और इसलिए उन्हें ईमान से बर्गुश्ता होने की ज़रूरत नहीं है। जिस तरह 1 पतरस 5:12 में ज़िक्र किया गया है कि मैं ने यह मुख़्तसर सा ख़त लिखवा कर तुम्हें भेजा है कि ताकि तुम्हारी हौसला अफ़्ज़ाई हो, मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है। उस पर क़ाइम रहना सबूत के साथ यह सताव उसके क़ारिईन के बीच फैलता जा रहा था। पहला पतरस मसीहियों के सताव को पूरे शुमाली एशिया माइनर में मुन्अकिस करता है।

?????’?

1 मुसीबतों के लिए जवाब दिया जाना।

बैरूनी ख़ाका

1. सलाम के अल्फ़ाज़ — 1:1, 2
2. ख़ुदा के फ़ज़ल के लिए उसकी हम्द — ओ — तारीफ़ — 1:3-12
3. ज़िन्दगी की पाकीज़्गी के लिए नसीहत — 1:13-5:12
4. आख़री सलाम के अल्फ़ाज़ — 5:13, 14

????? ??? ?????

1 पतरस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का रसूल है, उन मुसाफ़िरों
के नाम ख़त, जो पुन्तुस, ग़लतिया, क्प्पदुकिया, असिया और
बीथुइनिया सूबे में जा बजा रहते है,
2 और ख़ुदा बाप के 'इल्म — ए — साबिक़ के मुवाफ़िक़ रूह के
पाक करने से फ़रमाँबरदार होने और ईसा मसीह का ख़ून छिड़के
जाने के लिए बरगुज़ीदा हुए है। फ़ज़ल और इत्मीनान तुम्हें
ज़्यादा हासिल होता रहे।
3 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप की हम्द हो,
जिसने ईसा मसीह के मुर्दों में से जी उठने के ज़रिए, अपनी बड़ी
रहमत से हमे ज़िन्दा उम्मीद के लिए नए सिरे से पैदा किया,
4 ताकि एक ग़ैरफ़ानी और बेदाग़ और लाज़वाल मीरास को
हासिल करें;

5 वो तुम्हारे वास्ते [जो ख़ुदा की क़ुदरत से ईमान के वसीले से,
उस नजात के लिए जो आख़री वक़्त में ज़ाहिर होने को तैयार है,
हिफ़ाज़त किए जाते हो] आसमान पर महफ़ूज़ है।

6 इस की वजह से तुम ख़ुशी मनाते हो, अगरचे अब चन्द रोज़
के लिए ज़रूरत की वजह से, तरह तरह की आज़्माइशों की वजह
से ग़मज़दा हो;
7 और ये इस लिए कि तुम्हारा आज़माया हुआ ईमान, जो आग
से आज़माए हुए फ़ानी सोने से भी बहुत ही बेशक़ीमती है, ईसा
मसीह के ज़हूर के वक़्त तारीफ़ और जलाल और 'इज़्ज़त का
ज़रिया ठहरे।

8 उससे तुम अनदेखी मुहब्बत रखते हो और अगरचे इस वक़्त
उसको नहीं देखते तो भी उस पर ईमान लाकर ऐसी ख़ुशी मनाते
हो जो बयान से बाहर और जलाल से भरी है;
9 और अपने ईमान का मक़सद या'नी रूहों की नजात हासिल
करते हो।

10 इसी नजात के बारे में नबियों ने बड़ी तलाश और तहक़ीक़
की, जिन्होंने उस फ़ज़्ल के बारे में जो तुम पर होने को था नबुव्वत
की।

11 उन्होंने इस बात की तहक़ीक़ की कि मसीह का रूह जो उस
में था, और पहले मसीह के दुखों और उनके ज़िन्दा हो उठने के
बाद उसके के जलाल की गवाही देता था, वो कौन से और कैसे
वक़्त की तरफ़ इशारा करता था।
12 उन पर ये ज़ाहिर किया गया कि वो न अपनी बल्कि तुम्हारी
ख़िदमत के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनकी ख़बर अब तुम को
उनके ज़रिए मिली जिन्होंने रूह — उल — क़ुद्दुस के वसीले से,
जो आसमान पर से भेजा गया तुम को ख़ुशख़बरी दी; और फ़रिश्ते
भी इन बातों पर ग़ौर से नज़र करने के मुश्ताक़ हैं।

13 इस वास्ते अपनी 'अक़्ल की कमर बाँधकर और होशियार
होकर, उस फ़ज़्ल की पूरी उम्मीद रख्खो जो ईसा मसीह के ज़हूर
के वक़्त तुम पर होने वाला है।
14 और फ़रमाँबरदार बेटा होकर अपनी जहालत के ज़माने की
पुरानी ख़्वाहिशों के ताबे' न बनो।
15 बल्कि जिस तरह तुम्हारा बुलानेवाला पाक, है, उसी तरह
तुम भी अपने सारे चाल — चलन में पाक बनो;
16 क्यूँकि पाक कलाम में लिखा है, "पाक हो, इसलिए कि मैं
पाक हूँ।"
17 और जब कि तुम 'बाप' कह कर उससे दुआ करते हो, जो हर
एक के काम के मुवाफ़िक़ बग़ैर तरफ़दारी के इन्साफ़ करता है, तो
अपनी मुसाफ़िरत का ज़माना ख़ौफ़ के साथ गुज़ारो।
18 क्यूँकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल — चलन
जो बाप — दादा से चला आता था, उससे तुम्हारी ख़लासी फ़ानी
चीज़ों या'नी सोने चाँदी के ज़रिए से नहीं हुई;
19 बल्कि एक बे'ऐब और बेदाग़ बर्रे, या'नी मसीह के बेश
क़ीमत ख़ून से।
20 उसका 'इल्म तो दुनियाँ बनाने से पहले से था, मगर ज़हूर
आख़िरी ज़माने में तुम्हारी ख़ातिर हुआ,
21 कि उस के वसीले से ख़ुदा पर ईमान लाए हो, जिसने उस को
मुर्दों में से जिलाया और जलाल बख़्शा ताकि तुम्हारा ईमान और
उम्मीद ख़ुदा पर हो।
22 चूँकि तुम ने हक़ की ताबे 'दारी से अपने दिलों को पाक किया
है, जिससे भाइयों की बे'रिया मुहब्बत पैदा हुई, इसलिए दिल —
ओ — जान से आपस में बहुत मुहब्बत रख्खो।
23 क्यूँकि तुम मिटने वाले बीज से नहीं बल्कि ग़ैर फ़ानी से
ख़ुदा के कलाम के वसीले से, जो ज़िंदा और क़ाईम है, नए सिरे से

पैदा हुए हो।
24 चुनाँचे हर आदमी घास की तरह है, और उसकी सारी शान
— ओ — शौकत घास के फूल की तरह।
घास तो सूख जाती है, और फूल गिर जाता है।
25 लेकिन ख़ुदावन्द का कलाम हमेशा तक क़ाईम रहेगा।
ये वही ख़ुशख़बरी का कलाम है जो तुम्हें सुनाया गया था।

2

1 पस हर तरह की बदख़्वाही और सारे फ़रेब और रियाकारी और
हसद और हर तरह की बदगोई को दूर करके,
2 पैदाइशी बच्चों की तरह ख़ालिस रूहानी दूध के इंतज़ार में
रहो, ताकि उसके ज़रिए से नजात हासिल करने के लिए बढ़ते
जाओ,
3 अगर तुम ने ख़ुदावन्द के मेहरबान होने का मज़ा चखा है।

[illegible]

4 उसके या'नी आदमियों के रद्द किए हुए, पर ख़ुदा के चुने हुए
और क़ीमती ज़िन्दा पत्थर के पास आकर,
5 तुम भी ज़िन्दा पत्थरों की तरह रूहानी घर बनते जाते हो,
ताकि काहिनों का मुक़द्दस फ़िरक़ा बनकर ऐसी रूहानी क़ुर्बानियाँ
चढ़ाओ जो ईसा मसीह के वसीले से ख़ुदा के नज़दीक मक़बूल
होती है।
6 चुनाँचे किताब — ए — मुक़द्दस में आया है:
देखो, मैं सिय्यून में कोने के सिरे का चुना हुआ
और क़ीमती पत्थर रखता हूँ;
जो उस पर ईमान लाएगा हरगिज़ शर्मिन्दा न होगा।
7 पस तुम ईमान लाने वालों के लिए तो वो क़ीमती है, मगर
ईमान न लाने वालों के लिए
जिस पत्थर को राजगीरों ने रद्द किया वही

कोने के सिरे का पत्थर हो गया।
8 और
ठेस लगने का पत्थर
और ठोकर खाने की चट्टान हुआ,
क्यूँकि वो नाफ़रमान होकर कलाम से ठोकर खाते हैं और इसी के
लिए मुक़र्रर भी हुए थे।
9 लेकिन तुम एक चुनी हुई नस्ल, शाही काहिनों का फ़िरक़ा,
मुक़द्दस क़ौम, और ऐसी उम्मत हो जो ख़ुदा की ख़ास मिल्कियत
है ताकि उसकी ख़ूबियाँ ज़ाहिर करो जिसने तुम्हें अंधेरे से अपनी
'अजीब रौशनी में बुलाया है।
10 पहले तुम कोई उम्मत न थे
मगर अब तुम ख़ुदा की उम्मत हो,
तुम पर रहमत न हुई थी
मगर अब तुम पर रहमत हुई।
11 ऐ प्यारों! मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि तुम अपने आप
को परदेसी और मुसाफ़िर जान कर, उन जिस्मानी ख़्वाहिशों से
परहेज़ करो जो रूह से लड़ाई रखती हैं।
12 और ग़ैर — क़ौमों में अपना चाल — चलन नेक रखो,
ताकि जिन बातों में वो तुम्हें बदकार जानकर तुम्हारी बुराई करते
हैं, तुम्हारे नेक कामों को देख कर उन्हीं की वजह से मुलाहिज़ा के
दिन ख़ुदा की बड़ाई करें।
13 ख़ुदावन्द की ख़ातिर इंसान के हर एक इन्तिज़ाम के ताबे'
रहो; बादशाह के इसलिए कि वो सब से बुज़ुर्ग है,
14 और हाकिमों के इसलिए कि वो बदकारों को सज़ा और
नेकोकारों की ता'रीफ़ के लिए उसके भेजे हुए हैं।
15 क्यूँकि ख़ुदा की ये मर्ज़ी है कि तुम नेकी करके नादान
आदमियों की जहालत की बातों को बन्द कर दो।

16 और अपने आप को आज़ाद जानो, मगर इस आज़ादी को
बदी का पर्दा न बनाओ; बल्कि अपने आप को ख़ुदा के बन्दे जानो।
17 सबकी 'इज़्ज़त करो, बिरादरी से मुहब्बत रख्खो, ख़ुदा से
डरो, बादशाह की 'इज़्ज़त करो।

18 ऐ नौकरों! बड़े ख़ौफ़ से अपने मालिकों के ताबे' रहो, न सिर्फ़
नेकों और हलीमों ही के बल्कि बद मिज़ाजों के भी।
19 क्यूँकि अगर कोई ख़ुदा के ख़याल से बेइन्साफ़ी के बा'इस
दु:ख उठाकर तकलीफ़ों को बर्दाश्त करे तो ये पसन्दीदा है।
20 इसलिए कि अगर तुम ने गुनाह करके मुक्के खाए और सब्र
किया, तो कौन सा फ़ख़्र है? हाँ, अगर नेकी करके दु:ख पाते और
सब्र करते हो, तो ये ख़ुदा के नज़दीक पसन्दीदा है।

21 और तुम इसी के लिए बुलाए गए हो, क्यूँकि मसीह भी
तुम्हारे वास्ते दु:ख उठाकर तुम्हें एक नमूना दे गया है ताकि उसके
नक़्श — ए — क़दम पर चलो।

22 न उसने गुनाह किया

और न ही उसके मुँह से कोई मक्र की बात निकली,
23 न वो गालियाँ खाकर गाली देता था और न दु:ख पाकर किसी
को धमकाता था; बल्कि अपने आप को सच्चे इन्साफ़ करने वाले
ख़ुदा के सुपुर्द करता था।

24 वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर लिए हुए सलीब
पर चढ़ गया, ताकि हम गुनाहों के ऐ'तबार से जिएँ; और उसी के
मार खाने से तुम ने शिफ़ा पाई।
25 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया ख़ुदा का कलाम
है, अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो
ख़ुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा मसीह के वसीले से ख़ुदा का
जलाल ज़ाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी
की है। आमीन।

3

?????????

1 ऐ बीवियों! तुम भी अपने शौहर के ताबे' रहो,
2 इसलिए कि अगर कुछ उनमें से कलाम को न मानते हों,
तोभी तुम्हारे पाकीज़ा चाल — चलन और ख़ौफ़ को देख कर बग़ैर
कलाम के अपनी अपनी बीवी के चाल — चलन से ख़ुदा की तरफ़
खिंच जाएँ।
3 और तुम्हारा सिंगार ज़ाहिरी न हो, या'नी सर गूँधना और
सोने के ज़ेवर और तरह तरह के कपड़े पहनना,
4 बल्कि तुम्हारी बातिनी और पोशीदा इंसान ियत, हलीम
और नर्म मिज़ाज की ग़ुरबत की ग़ैरफ़ानी आराइश से आरास्ता
रहे, क्यूँकि ख़ुदा के नज़दीक इसकी बड़ी क़द्र है।
5 और अगले ज़माने में भी ख़ुदा पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस
'औरतें, अपने आप को इसी तरह संवारती और अपने अपने शौहर
के ताबे' रहती थीं।
6 चुनाँचे सारह अब्रहाम के हुक्म में रहती और उसे ख़ुदावन्द
कहती थी। तुम भी अगर नेकी करो और किसी के डराने से न डरो,
तो उसकी बेटियाँ हुईं।
7 ऐ शौहरों! तुम भी बीवियों के साथ 'अक़्लमन्दी से बसर करो,
और 'औरत को नाज़ुक ज़र्फ़ जान कर उसकी 'इज़्ज़त करो, और
यूँ समझो कि हम दोनों ज़िन्दगी की ने'मत के वारिस हैं, ताकि
तुम्हारी दु'आएँ रुक न जाएँ।
8 ग़रज़ सब के सब एक दिल और हमदर्द रहो, बिरादराना
मुहब्बत रख्खो, नर्म दिल और फ़रोतन बनो।
9 बदी के 'बदले बदी न करो और गाली के बदले गाली न दो,
बल्कि इसके बर'अक्स बर्क़त चाहो, क्यूँकि तुम बर्क़त के वारिस
होने के लिए बुलाए गए हो।
10 चुनाँचे

"जो कोई ज़िन्दगी से ख़ुश होना और अच्छे दिन देखना चाहे, वो
ज़बान को बदी से और होंटों को मक्र की बात कहने से
बाज़ रख्खे।
11 बदी से किनारा करे और नेकी को 'अमल में लाए, सुलह का
तालिब हो, और उसकी कोशिश में रहे।
12 क्यूँकि ख़ुदावन्द की नज़र रास्तबाज़ों की तरफ़ है, और उसके
कान उनकी दुआ पर लगे हैं, मगर बदकार ख़ुदावन्द की
निगाह में हैं।"
13 अगर तुम नेकी करने में सरगर्म हो, तो तुम से बदी
करनेवाला कौन है?
14 और अगर रास्तबाज़ी की ख़ातिर दु:ख सहो भी तो तुम
मुबारिक़ हो, न उनके डराने से डरो और न घबराओ;
15 बल्कि मसीह को ख़ुदावन्द जानकर अपने दिलों में मुक़द्दस
समझो; और जो कोई तुम से तुम्हारी उम्मीद की वजह पूछे,
उसको जवाब देने के लिए हर वक़्त मुस्त'ईद रहो, मगर हलीमी
और ख़ौफ़ के साथ।
16 और नियत भी नेक रख्खो ताकि जिन बातों में तुम्हारी
बदगोई होती है, उन्हीं में वो लोग शर्मिन्दा हों जो तुम्हारे मसीही
नेक चाल — चलन पर ला'न ता'न करते हैं।
17 क्यूँकि अगर ख़ुदा की यही मर्ज़ी हो कि तुम नेकी करने की
वजह से दु:ख उठाओ, तो ये बदी करने की वजह से दु:ख उठाने से
बेहतर है।
18 इसलिए कि मसीह ने भी या'नी रास्तबाज़ ने नारास्तों के
लिए, गुनाहों के बा'इस एक बार दु:ख उठाया ताकि हम को ख़ुदा
के पास पहुँचाए; वो जिस्म के ऐ'तबार से मारा गया, लेकिन रूह
के ऐ'तबार से तो ज़िन्दा किया गया।
19 इसी में से उसने जा कर उन क़ैदी रूहों में मनादी की,
20 जो उस अगले ज़माने में नाफ़रमान थीं जब ख़ुदा नूह के
वक़्त में तहम्मील करके ठहरा रहा था और वो नाव तैयार हो रही

थी, जिस पर सवार होकर थोड़े से आदमी या'नी आठ जानें पानी
के वसीले से बचीं।
21 और उसी पानी का मुशाबह भी या'नी बपतिस्मा, ईसा
मसीह के जी उठने के वसीले से अब तुम्हें बचाता है, उससे जिस्म
की नजासत का दूर करना मुराद नहीं बल्कि ख़ालिस नियत से
ख़ुदा का तालिब होना मुराद है।
22 वो आसमान पर जाकर ख़ुदा की दहनी तरफ़ बैठा है, और
फ़रिश्ते और इख़्तियारात और कुदरतें उसके ताबे' की गई हैं।

4

[illegible]

1 पस जबकि मसीह ने जिस्म के ऐ'तिबार से दुःख उठाया, तो
तुम भी ऐसे ही मिज़ाज इख़्तियार करके हथियारबन्द बनो; क्यूँकि
जिसने जिस्म के ऐ'तबार से दुःख उठाया उसने गुनाह से छुटकारा
पाया।
2 ताकि आइन्दा को अपनी बाक़ी जिस्मानी ज़िन्दगी आदमियों
की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ न गुज़ारे बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी के
मुताबिक़।
3 इस वास्ते कि ग़ैर — क़ौमों की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ काम
करने और शहवत परस्ती, बुरी ख़्वाहिशों, मयख़्वारी, नाचरंग,
नशेबाज़ी और मकरूह बुत परस्ती में जिस क़दर हम ने पहले वक़्त
गुज़ारा वही बहुत है।
4 इस पर वो ताअ'ज्जुब करते हैं कि तुम उसी सख़्त बदचलनी
तक उनका साथ नहीं देते और ला'न ता'न करते हैं,
5 उन्हें उसी को हिसाब देना पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों का
इन्साफ़ करने को तैयार है।
6 क्यूँकि मुर्दों को भी ख़ुशख़बरी इसलिए सुनाई गई थी कि
जिस्म के लिहाज़ से तो आदमियों के मुताबिक़ उनका इन्साफ़ हो,
लेकिन रूह के लिहाज़ से ख़ुदा के मुताबिक़ ज़िन्दा रहें।

7 सब चीज़ों का ख़ातिमा जल्द होने वाला है, पस होशियार
रहो और दुआ करने के लिए तैयार।
8 सबसे बढ़कर ये है कि आपस में बड़ी मुहब्बत रक्खो, क्यूँकि
मुहब्बत बहुत से गुनाहों पर पर्दा डाल देती है।
9 बग़ैर बड़बड़ाए आपस में मुसाफ़िर परवरी करो।
10 जिनको जिस जिस क़दर ने'मत मिली है, वो उसे ख़ुदा
की मुख़्तलिफ़ ने'मतों के अच्छे मुख़्तारों की तरह एक दूसरे की
ख़िदमत में सर्फ़ करें।
11 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया ख़ुदा का कलाम
है, अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो
ख़ुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा मसीह के वसीले से ख़ुदा का
जलाल ज़ाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी
की है। आमीन।
12 ऐ प्यारो! जो मुसीबत की आग तुम्हारी आज़माइश के लिए
तुम में भड़की है, ये समझ कर उससे ता'ज्जुब न करो कि ये एक
अनोखी बात हम पर ज़ाहिर' हुई है।
13 बल्कि मसीह के दुखों में जूँ जूँ शरीक हो ख़ुशी करो, ताकि
उसके जलाल के ज़हूर के वक़्त भी निहायत ख़ुश — ओ — ख़ुर्म
हो।
14 अगर मसीह के नाम की वजह से तुम्हें मलामत की जाती है
तो तुम मुबारिक़ हो, क्यूँकि जलाल का रूह या'नी ख़ुदा का रूह
तुम पर साया करता है।
15 तुम में से कोई शख़्स ख़ूनी या चोर या बदकार या औरों के
काम में दख़ल अन्दाज़ होकर दुःख न पाए।
16 लेकिन अगर मसीही होने की वजह से कोई शख़्स पाए तो
शरमाए नहीं, बल्कि इस नाम की वजह से ख़ुदा की बड़ाई करे।
17 क्यूँकि वो वक़्त आ पहुँचा है कि ख़ुदा के घर से 'अदालत
शुरू' हो, और जब हम ही से शुरू' होगी तो उनका क्या अन्जाम

होगा जो ख़ुदा की ख़ुशख़बरी को नहीं मानते?
18 और
“जब रास्तबाज़ ही मुश्किल से नजात पाएगा,
तो बेदीन और गुनाहगार का क्या ठिकाना?”
19 पस जो ख़ुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ दु:ख पाते हैं, वो नेकी करके
अपनी जानों को वफ़ादार ख़ालिक़ के सुपुर्द करें।

5

[illegible]

1 तुम में जो बुज़ुर्ग हैं, मैं उनकी तरह बुज़ुर्ग और मसीह के दुखों
का गवाह और ज़ाहिर होने वाले जलाल में शरीक होकर उनको
ये नसीहत करता हूँ।
2 कि ख़ुदा के उस गल्ले की गल्लेबानी करो जो तुम में है;
लाचारी से निगहबानी न करो, बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़
ख़ुशी से और नाजायज़ नफ़े' के लिए नहीं बल्कि दिली शौक़ से।
3 और जो लोग तुम्हारे सुपुर्द हैं उन पर हुकूमत न जताओ,
बल्कि गल्ले के लिए नमूना बनो।
4 और जब सरदार गल्लेबान ज़ाहिर होगा, तो तुम को जलाल
का ऐसा सहारा मिलेगा जो मुरझाने का नहीं।
5 ऐ जवानो! तुम भी बुज़ुर्गों के ताबे' रहो, बल्कि सब के सब एक
दूसरे की ख़िदमत के लिए फ़रोतनी से कमर बस्ता रहो, इसलिए
कि
“ख़ुदा मग़रुरों का मुक़ाबिला करता है,
मगर फ़रोतनों को तौफ़ीक़ बख़्शता है।”
6 पस ख़ुदा के मज़बूत हाथ के नीचे फ़रोतनी से रहो, ताकि वो
तुम्हें वक़्त पर सरबलन्द करे।
7 अपनी सारी फ़िक्र उसी पर डाल दो, क्यूँकि उसको तुम्हारी फ़िक्र
है।

8 तुम होशियार और बेदार रहो; तुम्हारा मुख़ालिफ़ इब्लीस
गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह ढूँडता फिरता है कि
किसको फाड़ खाए।
9 तुम ईमान में मज़बूत होकर और ये जानकर उसका मुक़ाबिला
करो कि तुम्हारे भाई जो दुनिया में हैं ऐसे ही दुःख उठा रहे हैं
10 अब ख़ुदा जो हर तरह के फ़ज़ल का चश्मा है, जिसने तुम
को मसीह ईसा में अपने अबदी जलाल के लिए बुलाया, तुम्हारे
थोड़ी मुद्दत तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें कामिल और
क़ाईम और मज़बूत करेगा।
11 हमेशा से हमेशा तक उसी की सल्तनत रहे। आमीन।
12 मैंने सिलवानुस के ज़रिए, जो मेरी दानिस्त में दियानतदार
भाई है, मुख़्तसर तौर पर लिख कर तुम्हें नसीहत की और ये गवाही
दी कि ख़ुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है, इसी पर क़ाईम रहो।
13 जो बाबुल में तुम्हारी तरह बरगुज़ीदा है, वो और मेरा
मरकुस तुम्हें सलाम कहते हैं।
14 मुहब्बत से बोसा ले लेकर आपस में सलाम करो।
तुम सबको जो मसीह में हो, इत्मीनान हासिल होता रहे।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc